VOTE VIBE
INSIGHTS FOR SMARTER DECISIONS

Flash Vibe

Ram Mandir Chanda Chori Episode

राम मंदिर चंदा चोरी प्रकरण

विपक्ष के सवालों को जनता की स्वीकृति, जाँच एजेंसियों पर भरोसा और 2027 पर संभावित चुनावी प्रभाव

15 July, 2026

connect@votevibe.in
votevibe.in
@VoteVibeIndia
@VoteVibeIndia
@VoteVibeIndia
AT Vote Vibe LLP

Volume: FV2601

Q1. कुछ लोग कहते हैं कि अखिलेश यादव, जिन पर राम मंदिर निर्माण का विरोध करने का आरोप है, को दान से जुड़े आरोप उठाने का नैतिक अधिकार नहीं है। कुछ अन्य कहते हैं कि विपक्ष होने के नाते सवाल उठाना उनका अधिकार है। आप किससे सहमत हैं?

Overall Results/समग्र परिणाम

उन्हें यह सवाल उठाने का नैतिक अधिकार नहीं है	11.9%
विपक्ष के नाते सवाल उठाना उनका अधिकार है	58.5%
कह नहीं सकते	29.6%

Region wise Trends/क्षेत्रीय रुझान

क्षेत्र	अवध	बुंदेलखंड	दोआब	पूर्वी उत्तर प्रदेश	उत्तर-पूर्वी उत्तर प्रदेश	रुहेलखण्ड	पश्चिमी उत्तर प्रदेश
उन्हें यह सवाल उठाने का नैतिक अधिकार नहीं है	16.7%	7.1%	11.4%	19.3%	2.9%	9.5%	4.0%
विपक्ष के नाते सवाल उठाना उनका अधिकार है	53.2%	77.6%	65.4%	69.2%	51.2%	58.2%	38.4%
कह नहीं सकते	30.1%	15.3%	23.2%	11.5%	45.9%	32.3%	57.6%

Caste-wise Trends | जातिवार रुझान

जातीय वर्ग	सामान्य	यादव	गैर-यादव ओबीसी	मुस्लिम	जाटव	गैर-जाटव अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
उन्हें यह सवाल उठाने का नैतिक अधिकार नहीं है	12.6%	10.6%	8.4%	12.8%	2.1%	5.7%	28.6%
विपक्ष के नाते सवाल उठाना उनका अधिकार है	60.8%	62.9%	11.3%	46.0%	53.9%	93.2%	28.6%
कह नहीं सकते	26.6%	26.5%	80.3%	41.2%	44.0%	1.0%	42.9%

Voting Intention-wise Trends | मतदान की वर्तमान पसंद के अनुसार रुझान

मतदान की वर्तमान पसंद	भाजपा	सपा	बसपा	कांग्रेस	रालोद	अन्य	निर्दलीय
उन्हें यह सवाल उठाने का नैतिक अधिकार नहीं है	20.3%	5.3%	0.5%	14.7%	2.8%	6.0%	2.9%
विपक्ष के नाते सवाल उठाना उनका अधिकार है	48.6%	69.8%	75.2%	74.1%	20.6%	63.4%	1.5%
कह नहीं सकते	31.1%	24.9%	24.3%	11.2%	76.6%	30.6%	95.6%

Q2. इस मामले में राज्य (योगी) सरकार द्वारा गठित SIT और पुलिस की कार्रवाई पर आपको कितना भरोसा है?

Overall Results/समग्र परिणाम

पूरा भरोसा है	43.3%
कुछ हद तक भरोसा है	12.4%
भरोसा नहीं है	26.4%
कह नहीं सकते	17.8%

Region wise Trends/क्षेत्रीय रुझान

क्षेत्र	अवध	बुंदेलखंड	दोआब	पूर्वी उत्तर प्रदेश	उत्तर-पूर्वी उत्तर प्रदेश	रुहेलखण्ड	पश्चिमी उत्तर प्रदेश
पूरा भरोसा है	39.9%	44.8%	50.7%	33.8%	47.9%	50.2%	36.8%
कुछ हद तक भरोसा है	15.0%	20.2%	12.3%	13.7%	7.7%	11.6%	6.8%
भरोसा नहीं है	22.9%	33.8%	22.9%	36.7%	23.4%	28.4%	22.1%
कह नहीं सकते	22.2%	1.2%	14.1%	15.9%	20.9%	9.8%	34.4%

VOTE VIBE
INSIGHTS FOR SMARTER DECISIONS

#FlashVibe
15 July, 2026

Voting Intention-wise Trends | मतदान की वर्तमान पसंद के अनुसार रुझान

मतदान की वर्तमान पसंद	भाजपा	सपा	बसपा	कांग्रेस	रालोद	अन्य	निर्दलीय
पूरा भरोसा है	51.9%	42.3%	31.0%	22.7%	46.4%	9.7%	94.1%
कुछ हद तक भरोसा है	15.1%	12.4%	9.5%	6.0%	2.8%	8.9%	1.5%
भरोसा नहीं है	15.6%	33.7%	51.6%	62.6%	25.4%	10.4%	4.4%
कह नहीं सकते	17.4%	11.6%	7.9%	8.7%	25.4%	70.9%	0.0%

Caste-wise Trends | जातिवार रुझान

जातीय वर्ग	सामान्य	यादव	गैर-यादव ओबीसी	मुस्लिम	जाटव	गैर-जाटव अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
पूरा भरोसा है	54.6%	33.1%	37.4%	48.3%	34.4%	5.2%	85.7%
कुछ हद तक भरोसा है	16.7%	15.9%	2.7%	6.9%	3.3%	5.2%	0.0%
भरोसा नहीं है	7.9%	35.1%	3.7%	26.2%	46.9%	89.1%	14.3%
कह नहीं सकते	20.8%	15.9%	56.1%	18.6%	15.3%	0.5%	0.0%

Q3. क्या यह मुद्दा आगामी चुनाव में आपके मतदान के फैसले को प्रभावित करेगा?

Overall Results/समग्र परिणाम

हाँ, काफी हद तक	47.1%
कुछ हद तक	17.3%
नहीं	17.7%
कह नहीं सकते	17.9%

Region wise Trends/क्षेत्रीय रुझान

क्षेत्र	अवध	बुंदेलखंड	दोआब	पूर्वी उत्तर प्रदेश	उत्तर-पूर्वी उत्तर प्रदेश	रुहेलखण्ड	पश्चिमी उत्तर प्रदेश
हाँ, काफ़ी हद तक	50.1%	78.4%	44.4%	59.1%	38.9%	37.7%	31.6%
कुछ हद तक	17.5%	11.7%	26.9%	8.8%	13.4%	21.2%	11.9%
नहीं	17.9%	8.4%	14.6%	11.7%	13.5%	29.1%	26.6%
कह नहीं सकते	14.5%	1.5%	14.1%	20.4%	34.2%	12.0%	30.0%

Caste-wise Trends | जातिवार रुझान

जातीय वर्ग	सामान्य	यादव	गैर-यादव ओबीसी	मुस्लिम	जाटव	गैर-जाटव अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
हाँ, काफ़ी हद तक	40.1%	62.8%	13.1%	30.6%	63.6%	97.4%	71.4%
कुछ हद तक	27.5%	5.9%	2.2%	25.3%	23.7%	0.5%	0.0%
नहीं	15.9%	15.0%	20.9%	36.1%	3.7%	1.6%	28.6%
कह नहीं सकते	16.5%	16.3%	63.8%	8.1%	9.0%	0.5%	0.0%

Voting Intention-wise Trends | मतदान की वर्तमान पसंद के अनुसार रुझान

मतदान की वर्तमान पसंद	भाजपा	सपा	बसपा	कांग्रेस	रालोद	अन्य	निर्दलीय
हाँ, काफ़ी हद तक	41.7%	51.8%	74.1%	72.3%	25.4%	11.0%	97.1%
कुछ हद तक	15.9%	22.4%	18.5%	18.9%	0.5%	8.9%	1.5%
नहीं	23.9%	8.7%	7.2%	4.1%	74.1%	19.8%	1.5%
कह नहीं सकते	18.5%	17.1%	0.2%	4.7%	0.0%	60.2%	0.0%

राम मंदिर चंदा चोरी प्रकरण सर्वेक्षण
विश्लेषण

प्रश्न 1: क्या अखिलेश यादव को सवाल पूछने की नैतिक अधिकार (मॉरल अथॉरिटी) है?

कुल आँकड़े:
- 58.5% उत्तरदाताओं का मानना है कि अखिलेश यादव को इस मुद्दे पर सवाल उठाने का नैतिक अधिकार है।
- 29.6% ने इस पर कोई स्पष्ट राय नहीं दी, जबकि 11.9% का मानना है कि उन्हें ऐसा अधिकार नहीं है।

क्षेत्र (Region) के अनुसार:
- बुंदेलखंड (77.6%) तथा पूर्वांचल (69.2%) में सबसे अधिक लोगों ने माना कि अखिलेश यादव को इस मुद्दे पर सवाल उठाने का नैतिक अधिकार है।
- पश्चिमी उत्तर प्रदेश (38.4%) में इस मत का समर्थन सबसे कम रहा। इसी क्षेत्र में सर्वाधिक 57.6% उत्तरदाताओं ने "कह नहीं सकते" का उत्तर दिया, जो इस क्षेत्र में मतदाताओं की असमंजस की स्थिति को दर्शाता है।

जाति (Caste) के अनुसार:
- गैर-जाटव अनुसूचित जाति (93.2%) तथा सामान्य वर्ग (60.8%) में सबसे अधिक लोगों ने माना कि अखिलेश यादव को इस मुद्दे पर सवाल उठाने का नैतिक अधिकार है।
- गैर-यादव अन्य पिछड़ा वर्ग में केवल 11.3% ने इसका समर्थन किया, जबकि 80.3% ने "कह नहीं सकते" कहा। इससे स्पष्ट होता है कि यह वर्ग इस मुद्दे पर सबसे अधिक असमंजस अथवा सतर्कता की स्थिति में है।
- अनुसूचित जनजाति वर्ग में मत लगभग समान रूप से विभाजित रहे—28.6% ने "हाँ", 28.6% ने "नहीं" और 42.9% ने "कह नहीं सकते" का उत्तर दिया।

वोटिंग इंटेंशन (Voting Intention) के अनुसार:
- समाजवादी पार्टी (69.8%), बहुजन समाज पार्टी (75.2%) तथा कांग्रेस (74.1%) के समर्थकों में भारी बहुमत का मानना है कि अखिलेश यादव को इस मुद्दे पर सवाल उठाने का नैतिक अधिकार है।
- उल्लेखनीय रूप से, भारतीय जनता पार्टी के 48.6% समर्थकों ने भी माना कि उन्हें यह अधिकार है। हालांकि, 20.3% भाजपा समर्थकों का मत इसके विपरीत है, जो सभी दलों के समर्थकों में सबसे अधिक है।
- अनिर्णीत तथा निर्दलीय मतदाताओं में क्रमशः 93.5% और 95.6% उत्तरदाताओं ने "कह नहीं सकते" का उत्तर दिया, जिससे स्पष्ट है कि इस वर्ग ने अभी तक इस विषय पर कोई निश्चित राय नहीं बनाई है।

प्रश्न 2: क्या SIT और पुलिस जाँच पर भरोसा है?

समग्र परिणाम
- 43.3% उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें पूरा भरोसा है।
- 12.4% ने कुछ हद तक भरोसा व्यक्त किया। इस प्रकार, कुल 55.7% उत्तरदाताओं को जाँच पर किसी न किसी स्तर पर विश्वास है।
- वहीं 26.4% ने कहा कि उन्हें बिल्कुल भरोसा नहीं है, जबकि 17.8% ने कोई स्पष्ट राय व्यक्त नहीं की।

वोटिंग इंटेंशन के अनुसार — यह सबसे स्पष्ट ध्रुवीकरण दिखाता है:
- भारतीय जनता पार्टी के समर्थकों में जाँच पर सबसे अधिक विश्वास देखने को मिला, जहाँ 51.9% ने पूरा भरोसा व्यक्त किया।
- समाजवादी पार्टी के समर्थकों में भी 42.3% ने जाँच पर पूर्ण विश्वास जताया।
- कांग्रेस के समर्थकों में सबसे अधिक अविश्वास दर्ज किया गया, जहाँ 62.6% ने कहा कि उन्हें जाँच पर बिल्कुल भरोसा नहीं है।
- बहुजन समाज पार्टी के समर्थकों में भी अविश्वास का स्तर अपेक्षाकृत अधिक रहा। इस वर्ग के 51.6% उत्तरदाताओं ने जाँच पर भरोसा न होने की बात कही।
- अनिर्णीत तथा निर्दलीय मतदाताओं में सर्वाधिक विश्वास देखने को मिला। इन वर्गों के लगभग 91–94% उत्तरदाताओं ने जाँच एजेंसियों पर पूरा भरोसा व्यक्त किया। यह संकेत देता है कि किसी दल से प्रत्यक्ष रूप से न जुड़े मतदाता जाँच प्रक्रिया को अपेक्षाकृत अधिक निष्पक्ष मानते हैं।

जाति (Caste) के अनुसार:
- अनुसूचित जनजाति वर्ग में जाँच एजेंसियों पर सबसे अधिक विश्वास दर्ज किया गया। इस वर्ग के 85.7% उत्तरदाताओं ने पूरा भरोसा व्यक्त किया।
- सामान्य वर्ग में भी बहुमत (54.6%) ने जाँच पर पूर्ण विश्वास जताया, जबकि केवल 7.9% ने अविश्वास व्यक्त किया।
- गैर-जाटव अनुसूचित जाति वर्ग में जाँच पर सबसे कम विश्वास देखने को मिला। इस वर्ग के केवल 5.2% उत्तरदाताओं ने भरोसा व्यक्त किया, जबकि 89.1% ने स्पष्ट रूप से कहा कि उन्हें जाँच पर भरोसा नहीं है।
- जाटव वर्ग में भी विश्वास की तुलना में अविश्वास अधिक रहा। 34.4% ने पूरा भरोसा जताया, जबकि 46.9% ने जाँच पर अविश्वास व्यक्त किया।
- गैर-यादव अन्य पिछड़ा वर्ग में सबसे अधिक अनिश्चितता देखने को मिली। इस वर्ग के 56% से अधिक उत्तरदाताओं ने कोई स्पष्ट राय व्यक्त नहीं की।

निष्कर्ष
जाँच एजेंसियों पर भरोसे का स्तर राजनीतिक झुकाव के साथ स्पष्ट रूप से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। भारतीय जनता पार्टी के समर्थकों में जाँच पर विश्वास अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी के समर्थकों में अविश्वास का स्तर अधिक दिखाई देता है। वहीं, अनिर्णीत एवं निर्दलीय मतदाताओं में जाँच प्रक्रिया के प्रति उल्लेखनीय विश्वास दर्ज किया गया।

प्रश्न 3: क्या यह मुद्दा वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव में मतदान को प्रभावित करेगा?

कुल आँकड़े:

- 7.1% उत्तरदाताओं का मानना है कि यह मुद्दा निश्चित रूप से वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव को प्रभावित करेगा।
- 17.3% उत्तरदाताओं ने माना कि इसका कुछ हद तक प्रभाव पड़ेगा। इस प्रकार, कुल 64.4% उत्तरदाताओं का मानना है कि यह मुद्दा किसी न किसी रूप में चुनावी परिणामों को प्रभावित करेगा।
- वहीं 17.7% का मानना है कि इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, जबकि 17.9% ने इस विषय पर कोई स्पष्ट राय व्यक्त नहीं की।

क्षेत्रवार विश्लेषण:

- बुंदेलखंड (78.4%) में सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने माना कि यह मुद्दा विधानसभा चुनाव पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालेगा।
- इसके विपरीत पश्चिमी उत्तर प्रदेश (31.6%) तथा रुहेलखण्ड (37.7%) में इस मत का समर्थन सबसे कम रहा, जिससे संकेत मिलता है कि इन क्षेत्रों में इसे अपेक्षाकृत कम प्रभावशाली चुनावी मुद्दे के रूप में देखा जा रहा है।

मतदान की वर्तमान पसंद के अनुसार विश्लेषण

- ।निर्दलीय मतदाताओं में 97.1% उत्तरदाताओं का मानना है कि यह मुद्दा चुनाव पर निश्चित रूप से प्रभाव डालेगा। इससे स्पष्ट होता है कि दलगत प्रतिबद्धता से इतर मतदाता भी इसे एक महत्वपूर्ण चुनावी विषय मान रहे हैं।
- बहुजन समाज पार्टी (74.1%) तथा कांग्रेस (72.3%) के समर्थकों में भी भारी बहुमत का मत है कि यह मुद्दा चुनावी परिणामों को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित करेगा।
- समाजवादी पार्टी के 51.8% समर्थकों ने भी इसे महत्वपूर्ण चुनावी मुद्दा माना।
- राष्ट्रीय लोकदल के समर्थकों में 74.1% का मानना है कि इस मुद्दे का चुनाव पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह एकमात्र ऐसा राजनीतिक समूह है जहाँ बहुमत ने इस मुद्दे के चुनावी प्रभाव को नकारा।
- भारतीय जनता पार्टी के 41.7% समर्थकों ने माना कि इसका स्पष्ट प्रभाव पड़ेगा, जबकि 23.9% ने कहा कि इसका कोई प्रभाव नहीं होगा। राष्ट्रीय लोकदल के बाद यह दूसरा सबसे बड़ा वर्ग है जिसने चुनावी प्रभाव से असहमति व्यक्त की।

जाति वार विश्लेषण

- गैर-जाटव अनुसूचित जाति वर्ग में सर्वाधिक 97.4% उत्तरदाताओं का मानना है कि यह मुद्दा मतदान को निश्चित रूप से प्रभावित करेगा। इससे स्पष्ट है कि यह वर्ग इस विषय को चुनावी दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानता है।
- जाटव (63.6%) तथा यादव (62.8%) वर्गों में भी स्पष्ट बहुमत ने माना कि इसका चुनावी प्रभाव पड़ेगा।
- अनुसूचित जनजाति वर्ग के 71.4% उत्तरदाताओं ने भी इस मत का समर्थन किया।
- गैर-यादव अन्य पिछड़ा वर्ग में केवल 13.1% उत्तरदाताओं ने माना कि इसका निश्चित प्रभाव पड़ेगा। यही वर्ग सबसे अधिक असमंजस में भी दिखाई दिया, जहाँ 63.8% उत्तरदाताओं ने कोई स्पष्ट राय व्यक्त नहीं की।
- मुस्लिम वर्ग में 36.1% उत्तरदाताओं का मानना है कि इस मुद्दे का मतदान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके बावजूद, इस वर्ग के 55.9% उत्तरदाताओं (30.6% निश्चित प्रभाव + 25.3% कुछ हद तक प्रभाव) का मानना है कि इसका चुनाव पर किसी न किसी रूप में प्रभाव अवश्य पड़ेगा।
- सामान्य वर्ग के 67.6% उत्तरदाताओं (40.1% निश्चित प्रभाव + 27.5% कुछ हद तक प्रभाव) का मानना है कि यह मुद्दा चुनाव को प्रभावित करेगा। हालांकि, इस वर्ग में इसे निश्चित रूप से प्रभावी मानने वालों का प्रतिशत यादव और जाटव वर्गों की तुलना में अपेक्षाकृत कम है।

समग्र निष्कर्ष (Overall Takeaway)

- 58.5% उत्तरदाताओं का मानना है कि अखिलेश यादव को इस मुद्दे पर सवाल उठाने का नैतिक अधिकार है। हालांकि, यह धारणा मतदाताओं की राजनीतिक पसंद के अनुसार स्पष्ट रूप से बदलती दिखाई देती है।
- विशेष जाँच दल (एसआईटी) एवं पुलिस जाँच पर जनता का समग्र रूप से भरोसा दिखाई देता है। हालांकि, इस प्रश्न पर स्पष्ट राजनीतिक ध्रुवीकरण देखने को मिलता है। सत्तापक्ष के समर्थकों में जाँच पर विश्वास अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि विशेषकर कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी के समर्थकों में अविश्वास का स्तर अधिक है।
- लगभग दो-तिहाई (64.4%) उत्तरदाताओं का मानना है कि यह मुद्दा वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव को किसी न किसी रूप में प्रभावित करेगा। इससे संकेत मिलता है कि यह प्रकरण आगामी चुनावी विमर्श का एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन सकता है।
- बुंदेलखंड तथा पूर्वांचल में इस मुद्दे का संभावित राजनीतिक प्रभाव सबसे अधिक दिखाई देता है, जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में मतदाता अपेक्षाकृत अधिक असमंजस की स्थिति में दिखाई देते हैं।

THANK YOU

Prepared by: AT VoteVibe LLP

connect@votevibe.in
votevibe.in
@VoteVibeIndia
@VoteVibeIndia
@VoteVibeIndia
AT Vote Vibe LLP